कृष्ण चन्द्र महादेविया

मेरे अपने

ई-मेल-krishanchandermahadevia@gmail ।com

अचानक परिवार के सदस्य की मृत्यु का समाचार पाकर शिव शर्मा किंकर्तव्यविमूढ़- सा आँगन में खड़ा रह गया था । उसके भीतर का तूफान उसे बेचैन कर तड़पाने-सा लगा था। हालांकि मृतक का अपना अलग घर-बार और कारोबार था । जैसे ही वह कार लेकर मृतक को लाने चलने लगा तो पत्नी ने धीमी से टोका—

"सुनो जी।"

शिव शर्मा ने केवल पीड़ा भरे दिल से पत्नी की ओर देखा।

"कार में लाश नहीं लाते, अपशगुन होता है।"

शिव शर्मा की पत्नी के सामने कभी चूं तक नहीं होती थी; किंतु अब उसके हृदय का बांध टूट गया। अपनों के प्रति प्यार से भरपूर उसकी रुलाई फूट पड़ी।

"मरने वाला मेरा चाचा है कुसुम! मेरे पिताजी का सगा भाई। इन्होंने मुझे गोद में खेलाया है । प्यार किया है, स्नेह लुटाया है । तुम कहती हो कार में लाश नहीं लाते ?"

"एम्बुलेंस मंगवाते हैं ।"

"चुप रहो। यदि कहीं घर से बाहर देर-सबेर मैं मर जाऊँ, तब भी मेरी लाश लाने के लिए कार के लिए मना कर दोगी ? मेरे अपने की मृत्यु हुई है, मैं तो अपनी कार में ही अस्पताल से उनकी लाश लाऊँगा ।"

अब शिव शर्मा जार-जार रोते कार स्टार्ट करने लगा था; जबकि उसकी पत्नी अपना-सा मुँह लेकर कनखियों से इधर-उधर देखने लगी थी ।

प्यास

कृष्ण चन्द्र महादेविया

कविता पाठ के लिए अभी पांच-छः कवि-कवयित्रियाँ शेष थे । पास की साहित्यिक संस्था द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन बढ़िया जमा हुआ था ।

"सोनी जी, पानी की क्रेट कहाँ रखी है ?"

"किसलिए?"

"सुप्रिया और कांता जी पानी माँग रही हैं ।"

"मरने दो, छोड़ो अब ।"

"प्यास लगी होगी । जब पानी की बोतले हैं, तो देने में क्या दिक्कत है ?"

"यार पानी-पुनी छोड़ो अब। क्रेट वापिस कर देंगे।"

"प्यासा छोड़कर ।"

"पूरा क्रेट वापस कर संस्था का पैसा बचाएँगे ।"

रवि पंधेर के मन में आया कि दूर-दराज से आए लेखक-कवियों के प्रति संस्था के मुखिया की निम्न सोच की बखिया उधेड़ दे । किंतु सबके सामने संस्था की टाँग नंगी हो जाने के डर से वह खून के घूँट पीकर रह गया।

कौवा

हवा में उड़ता हुआ लोकेश वर्मा जैसे ही मंदिर के गेट से बाहर निकला, सामने गगन गिल को देखकर वह मुस्कुराया।

"अरे वर्मा जी, आज उल्टे बांस बरेली को !! कैसे ?"

"समझा नहीं गिल भाई।"

"आप मंदिर जाते ही नहीं थे, आखिर सुबह का भूला शाम को घर पहुँच ही गया।"

"अरे भाई, मैं माथा टेकने थोड़े ही गया था ।"

"तो फिर।"आश्चर्य से गिल ने पूछा ।

"यह देखो, पानी की बोतलों से भरा थैला। मंदिर के फ्रिज से शीतल जल लेने आया था।" बेझिझक लोकेश वर्मा ने कहा।

मंदिर बुरा, किंतु पानी अच्छा। लोकेश वर्मा को कौवे में बदलता देख गगन गिल के हाथों के तोते उड़ गए थे।